दुःख कौन हरे बिन तेरे

दुख कौन हरे बिन तेरे,
रघुबीर कृपालू मेरे ।
जब से संसार में आया,
ममता में रहा भुलाया,
मद काम क्रोध सब घेरे ।
रघुबर कृपालू मेरे ।
दुख कौन हरे बिन तेरे.....

हरि भजन न मो को भाया,
नहिं प्रेम चरन रघुराया,
अंत: में छाए अंधेरे ।
रघुबीर कृपालू मेरे ।
दुख कौन हरे बिन तेरे.....

तन धोया मन नहिं धोया,
यह जीवन व्यर्थ बिगोया,
छूटे न भ्रमण के फेरे ।
रघुबीर कृपालू मेरे ।
दुख कौन हरे बिन तेरे.....

प्रभु अंत समय आया जब,
तेरि याद प्रभू आई तब,
'ब्रह्मेश्वर' शरन है तेरे ।
रघुबीर कृपालू मेरे ।
दुख कौन हरे बिन तेरे.....

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/25828/title/dukh-kaun-hare-bin-tere

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |